अध्याय 25.
उपाध्याय परमेष्ठी

1. उपाध्याय परमेष्ठी किसे कहते हैं ?

जो चारित्र का पालन करते हुए संघ में पठन-पाठन के अधिकारी होते हैं, जो मुनियों के अतिरिक्त श्रावकों को भी अध्ययन कराते हैं, तथा ग्यारह अङ्ग और चौदह पूर्व के ज्ञाता होते हैं अथवा वर्तमान में शास्त्रों के विशेष ज्ञाता होते हैं, वे उपाध्याय परमेष्ठी कहलाते हैं।

2. उपाध्याय परमेष्ठी के कितने मूलगुण होते हैं ?

उपाध्याय परमेष्ठी के 25 मूलगुण होते हैं। ग्यारह अङ्ग और चौदह पूर्व।

3. ग्यारह अङ्गों के नाम कौन कौन से हैं ?

1.आचाराङ्ग, 2. सूत्रकृताङ्ग, 3. स्थानाङ्ग, 4. समवायाङ्ग, 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति अङ्ग, 6. ज्ञातृकथाङ्ग, 7. उपासकाध्ययनाङ्ग, 8.अन्तकृतदशाङ्ग, 9. अनुत्तरोपपादकदशाङ्ग, 10. व्याकरणाङ्ग, 11. विपाकसूत्राङ्ग ।

4. बारहवाँ अङ्ग कौन-सा है एवं उसके कितने भेद हैं ?

बारहवाँ अङ्ग दृष्टिवादाङ्ग है। इसके 5 भेद हैं। 1.परिकर्म, 2.सूत्र, 3. प्रथमानुयोग, 4. पूर्वगत, 5.चूलिका।

5. परिकर्म के कितने भेद हैं ?

पाँच भेद हैं। 1. चन्द्रप्रज्ञप्ति, 2. सूर्यप्रज्ञप्ति, 3. जम्बूद्वीपप्रज्ञप्ति, 4. द्वीपसागरप्रज्ञप्ति, 5. व्याख्याप्रज्ञप्ति।

6. चूलिका के कितने भेद हैं ?

पाँच भेद हैं। 1. जलगता चूलिका, 2. स्थलगता चूलिका, 3. मायागता चूलिका, 4. आकाशगता चूलिका, 5. रूपगता चूलिका।

7. पूर्वगत के कितने भेद हैं ?

चौदह भेद हैं -1. उत्पाद पूर्व, 2. आग्रायणीय पूर्व, 3. वीर्यानुप्रवाद पूर्व, 4. अस्तिनास्तिप्रवाद पूर्व, 5. ज्ञानप्रवाद पूर्व, 6. सत्यप्रवाद पूर्व, 7. आत्मप्रवाद पूर्व, 8. कर्मप्रवाद पूर्व, 9. प्रत्याख्यान पूर्व, 10. विद्यानुवाद पूर्व, 11. कल्याणानुवाद पूर्व, 12. प्राणानुप्रवाद पूर्व, 13. क्रियाविशाल पूर्व, 14. लोकबिन्दुसार पूर्व।

अभ्यास

सही या गलत बताइए-

1. परिकर्म बारहवाँ अङ्ग का भेद है।
2. चूलिका के पाँच भेद नहीं हैं।
3. ग्यारह अङ्ग एवं चौदह पूर्व को ही द्वाद्वशाङ्ग कहते हैं।